

[Shri Raghu Ramaiah]

Members for discussion of the various suggestions. More than that, I cannot add anything.

11.53 hrs.

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL'S (DUTIES, POWERS AND CONDITIONS OF SERVICE) BILL.

EXTENSION OF TIME FOR PRESENTATION OF REPORT OF JOINT COMMITTEE.

श्री एस० एम० जोशी (पूना): उपाध्यक्ष महोदय, मैं निम्नलिखित प्रस्ताव पेश करना चाहता हूँ :

“कि यह सभा भारत के नियंत्रक और महा-लेखापरीक्षक की सेवा की शर्तों को अवधारित करने तथा उसके कर्तव्य और शक्तियों को विहित करने और तत्संबन्धित या उससे आनुषंगिक विषयों की व्यवस्था करने वाले विधेयक सम्बन्धी संयुक्त समिति के प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने के लिये नियत समय को वर्षाकालीन सत्र (1970) की “प्रथम दिन तक बढ़ाती है।”

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

“That this House do extend the time appointed for the presentation of the Report of the Joint Committee on the Bill to determine the conditions of service of the Comptroller and Auditor General of India and to prescribe his duties and powers and for matters connected therewith or incidental thereto upto the 1st day of the Monsoon Session (1970)”.

The motion was adopted.

11.54 hrs.

**DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS (RAILWAYS), 1969-70—
contd.**

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House will now take up further discussion and voting on the Supplementary Demands for Grants (Railways) for which 50 minutes are left.

श्री सत्य नारायण सिंह (वाराणसी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं वर्ष 1969-70 के बजट (रेलवे) सम्बन्धी अनुदानों की अनुपूरक मांगों पर बोलते हुए पहले तो यह कहना चाहूँगा कि इस तरह की मांगें हमेशा सदन के सामने पेश की जाती हैं और सदन द्वारा उन्हें स्वीकृति प्रदान की जाती है। उन की चर्चा के दौरान सदन के सभी मੈम्बर रेलवे विभाग में क्या कृतियाँ हैं, उसके कार्य में क्या गड़बड़ियाँ हैं उन के ऊपर यहाँ सदन में प्रकाश डालते हैं और मंत्री महोदय हमेशा इस बात का आश्वासन देते हैं कि उन के मुझावों पर अमल किया जायेगा और उन खामियों को दूर करने की कोशिश की जायेगी लेकिन लगता ऐसा है कि पार्लियामेंट के बन्द हो जाने के बाद बहस बन्द हो जाने के बाद वह सारे मसले भूल जाते हैं और उन के बारे में कोई भी कदम नहीं उठाया जाता है।

पहली बात मैं यह कहना चाहता हूँ मुगलसराय हिंदूस्तान का सबसे बड़ा रेलवे जंक्शन है जहाँ पर कि चारों तरफ से रेलगाड़ियाँ आती जाती हैं। वहाँ पर जाकर आप देख सकते हैं कि वहाँ के रेलवे कर्मचारियों के लिये जो जगह बनाई गई है वह कितनी असन्तोषजनक है कि जिसमें कठिन जाड़े में या गर्मी में न तो वह किसी तरीके से शीत से बच सकते हैं और न ही लू से बच सकते हैं और उन के लिये काम करना मुश्किल हो जाता है। बारबार इस के ऊपर अधिकारियों का ध्यान खींचा गया लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया और हालत यह है कि आज भी वहाँ बैठ कर काम करना रेलवे कर्मचारियों के लिये मुश्किल हो जाता है।

दूसरी बात जो मैं आप के सामने कहता हूँ वह चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के रहने के लिये की गई आवास व्यवस्था से सम्बन्धित है। आवास की जसी व्यवस्था उन के लिये की गई है उस को देखन से लगता है कि उन्हें इंसान नहीं समझा जाता है। उन्हें रहने के लिय जो क्वार्टर दिया गया है जिसमें कि वह कर्मचारी अपने तमाम